मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

एनजीटी का नकली हथौड़ा 3
कृष्णपाल की किश्ती मझधार में 4
प्रधानमंत्री मोदी आयोग 5
शिक्षा साम्प्रदायिक कैंपस आपराधिक 6
भाजपा का भरोसा मोदी में 8

वर्ष 32 अंक -26 फ़रीदाबाद 12-18 मई 2019 फोन - 9999595632 ₹2.50

हरियाणा की 10 संसदीय सीटों का चुनावी विश्लेषण

हरियाणा में मुकाबला 5-5; 5-4-1 या फिर 8-2 ...मजदूर मोर्चा का आकलन!

जाट और पंजाबियों का वोट बुरी तरह से बंटने का फायदा भाजपा उठाना चाहेगी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद: यह अखबार जब आपके हाथों में पहुंचेगा, या तो आप वोट डाल चुके होंगे या डालने जा रहे होंगे। नतीजे 23 मई को आएंगे, लेकिन 10 मई को वोट देने के बाद आप की जिज्ञासा यह जानने के लिए बढ़ती जाएगी कि आखिर हरियाणा की 10 लोकसभा सीटों पर कौन सी पार्टी कहां से जीतने जा रही है। मजदूर मोर्चा के पाठकों के लिए हमने राज्य की दसों सीटों का आकलन किया है।

पहली बात तो यह जान लीजिए कि राज्य की सभी 10 लोकसभा सीटों पर सिर्फ हिसार को छोड़कर हर सीट पर भाजपा और कांग्रेस का सीधा मुकाबला है। इस तरह यह साफ है कि जाटों और पंजाबियों का वोट बुरी तरह बंटने की वजह से भाजपा को इसका फायदा मिलता दिख रहा है और कांग्रेस चार सीटों के अलावा मुकाबले में नहीं है। 'मजदूर मोर्चा' लगातार लिखता रहा है कि भाजपा दो साल पहले से ही हरियाणा में जाट और पंजाबियों के वोटों को बांटने के काम में लगी हुई थी। जिसका मीठा फल उसे इस चुनाव में चखने को मिलेगा। तमाम दलों के जाट नेताओं की पुंगी इस चुनाव में बजने वाली है। उनकी चौधराहट या पगड़ी इस चुनाव में तार-तार होने जा रही है।

1. सोनीपत लोकसभा सीट

पता नहीं किस अशुभ घड़ी में यहां से कांग्रेस ने पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा को टिकट देकर लड़ने भेज दिया। इसके बजाय हुड्डा को चुनाव लड़ने से मुक्त रखकर चुनाव मैनेज कराने की जिम्मेदारी सौंपी जाती तो कांग्रेस फायदे में रहती। हालात ये हैं कि यहां अंतिम समय में हुड्डा को वोट के लिए जाटों के गांवों में रोना पड़ा है। आपकी नजर से शायद वह विडियो गुजरा हो। यहां पर सीधा मुकाबला जाट बनाम ब्राह्मण है। रोचक तथ्य यह है कि मोदी फैक्टर, राष्ट्रवाद फैक्टर के चलते जहां जाट वोट यहां बंटने जा रहा है, वहां ब्राह्मण वोट थोक में भाजपा प्रत्याशी रमेश कौशिक को मिलेगा। इस तरह सोनीपत में भाजपा फिलहाल भारी है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने अपनी जिंदगी में इतना मुश्किल चुनाव कभी नहीं लड़ा था। जाटों के थोक वोट के बावजूद भाजपा ने इस हद तक उन्हें गुमराह कर दिया है कि हुड्डा साहब हार की कगार पर खड़े हैं। हालांकि आकलन के आधार पर बीबीसी के संवाददाता ने मुझे बताया है कि हुड्डा बहुत मजबूती से लड़ रहे हैं और जीत सकते हैं।

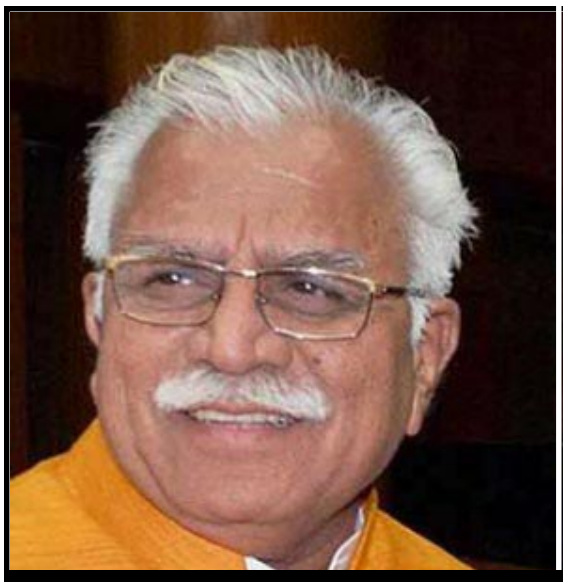

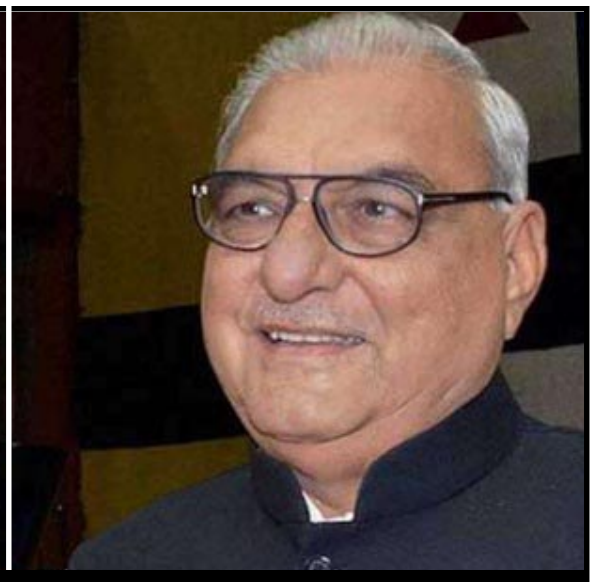

खट्टर बनाम हुड्डा : जाटों और पंजाबियों को बुरी तरह बांट दिया हरियाणा में!

10. फरीदाबाद लोकसभा सीट

मजदूर मोर्चा ने जैसा कि पहले भी लिखा था कि फरीदाबाद के मतदाताओं के सामने नागनाथ और सांपनाथ में से किसी एक को चुनने की मजबूरी है। भाजपा ने केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर को मैदान में उतारा है तो भाजपा से कांग्रेस में वापसी करने वाले और इस सीट से तीन बार सांसद रहे अवतार सिंह भड़ाना को टिकट दिया है। अवतार तीन बार सांसद रहे लेकिन किसी अच्छे काम की वजह से फरीदाबाद शहर और गांवों के लोग उन्हें याद नहीं रखते। कृष्णपाल गुर्जर 2014 में मोदी लहर में जीते थे। लेकिन उन्हें धन कमाने की इतनी लालसा थी कि पूरे पांच साल जमीन के धंधों में लगा दिए। दोनों प्रत्याशी गुर्जर हैं। उनके गोत्र पर नजर डाली जाए तो कृष्णपाल गुजरों में बैसला गोत्र से हैं जबकि अवतार गोत्र से भड़ाना हैं। फरीदाबाद जिले में आबादी के हिसाब से सबसे ज्यादा नागरों के गांव हैं, फिर भड़ाना के और उसके बाद चपराना गोत्र और अन्य छोटे-छोटे गोत्रों जिनमें चंदीला और बैसला आते हैं। गोत्र के हिसाब से अवतार भड़ाना का पलड़ा कागजों पर भारी लगता है लेकिन ऐसा नहीं है। कृष्णपाल गुर्जर ने तमाम गोत्रों के प्रमुख लोगों को अपने पाले में लाकर और उन्हें मोटा इलेक्शन फंड देकर अपनी-अपनी पाल को भाजपा के खेमे में लाने के लिए तैनात कर रखा है। कुछ गांवों में जब कृष्णपाल का विरोध होने लगा तो उन्होंने अपनी रणनीति बदलकर मोदी और राष्ट्रवाद के नाम पर वोट मांगना शुरू कर दिया। इस तरह फरीदाबाद सीट जो अपेक्षाकृत कांग्रेस के लिए आसान लग रही थी, वह भाजपा के पाले में जाती दिखाई दे रही है। फरीदाबाद में आरएसएस भी पूरे जीजान से जुटा हुआ है। उसने हिंदुओं के विभिन्न समुदायों जैसे वैश्य, प्रजापति, पहाड़ी आदि की बैठकें आयोजित कर सुनियोजित तरीके से वोटिंग कराने का निर्देश जारी किया है। लेकिन एनआईटी और शहर में बिखरे पंजाबियों ने अगर कांग्रेस और राहुल गांधी के नाम पर वोट डाला तो अवतार भड़ाना का पलड़ा भी भारी हो सकता है।

2. रोहतक लोकसभा सीट

यहां से कांग्रेस ने फिर से भूपेंद्र सिंह हुड्डा के बेटे दीपेंद्र सिंह हुड्डा को मैदान में उतारा है। वह लगातार बढ़त बनाए हुए हैं। रोहतक में कांग्रेस का पलड़ा भारी है। यहां से एक पूर्व कांग्रेसी अरविंद शर्मा को बीजेपी ने मैदान में उतारा है। दरअसल, अरविंद करनाल से कांग्रेस सांसद रह चुके हैं। लेकिन इस बार उनका टिकट कटा तो वह बीजेपी में चले गए। अरविंद के बारे में मशहूर के है कि उनके पास इतना पैसा है कि वह हर पार्टी को जेब में रखते हैं लेकिन महज पैसे के दम पर अगर कोई चुनाव जीत सकता होता तो देश के तमाम उद्योगपति अब तक सांसद बन चुके होते। मुश्किल मुकाबले के बावजूद दीपेंद्र सिंह हुड्डा यहां से सीट निकाल सकते हैं। यहां भी जाट और ब्राह्मण का सीधा मुकाबला है लेकिन अरविंद इस इलाके के लिए एकदम नए हैं। इसका असर मतदाताओं पर पड़ेगा।

3. कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट

कुरुक्षेत्र से समीकरण बदले हुए हैं। यहां से भाजपा टिकट पर राजकुमार सैनी 2014 में जीते थे। लेकिन भाजपा ने उनका इस्तेमाल जाटों को गाली दिलाने और पिछड़ों का वोट काटने के लिए उनसे अलग पार्टी बनवाने में जी भरकर किया। राजकुमार सैनी को जब यह बात समझ आई तो वह बागी हो गए। मजबूरन भाजपा को यहां से खट्टर कैबिनेट के मंत्री नसीब सैनी को मैदान में उतारना पड़ा। भाजपा के नसीब सैनी और कांग्रेस के निर्मल सिंह का सीधा मुकाबला है। नसीब सैनी लगातार भारी पड़ रहे हैं लेकिन पिछले दो दिनों में निर्मल सिंह ने भी अपनी स्थिति में सुधार किया है। निर्मल सिंह पुराने कांग्रेसी हैं। उनका अपना गृह क्षेत्र अंबाला है लेकिन सुरक्षित सीट होने की वजह से निर्मल को कुरुक्षेत्र आना पड़ा। बहरहाल, यहां भाजपा भारी पड़ रही है।

शेष पेज दो पर

कृष्णपाल का वोट बैंक नहीं पूरा होने दे रहा मेवला-रेलवे अंडरपास

फ़रीदाबाद (म.मो.) तीसियों करोड़ 'हूडा' के माध्यम से हरियाणा सरकार के व लगभग इतने ही रुपये रेलवे विभाग के खर्च हो चुकने के बावजूद पांच वर्ष से अधूरा पड़ा है इस अंडरपास का काम। उक्त खर्च में वह रकम नहीं जोड़ी गयी है जो सरकार ने बतौर मुआवज़ा उन ग्रामीणों को अदा कर रखी है जिनकी ज़मीन अथवा मकान इसके रास्ते में पड़ते हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग उतर कर अंडरपास के नीचे से गुजर कर जब सड़क मेवला गांव की ओर जाती है तो उसके सामने करीब 150 मीटर लम्बी व 50 मीटर चौड़ी पट्टी को सरकार ने सड़क बनाने के लिये करोड़ों रुपये मुआवज़ा देकर अधिग्रहीत किया था योजना एवं नक्शे के अनुसार यह सड़क गांव से निकल कर सिद्धदाता आश्रम की ओर से होते हुए अनखीर-सूरजकुंड रोड से जुड़नी थी। तभी इस अंडरपास का लाभ सेक्टर 45, 46,47, 21 सी आदि को मिल सकता था।

लेकिन जिन लोग़ों ने अपनी ज़मीनों के मोटे मुआवजे हजम कर लिये तथा सुप्रीम कोर्ट तक से भी केस हार चुके हैं, उन लोग़ों ने अभी तक कब्ज़े नहीं छोड़े हैं। और इस पट्टी में, अपने-अपने हिस्से की ज़मीन पर छोटी-छोटी बस्तियां बसा रखी हैं। इन बस्तियों में सैंकड़ों दड़बेनुमा कमरे बना कर ग़रीब मज़दूरों को किराये पर दे रखे हैं। दो-दो हज़ार रुपये के कमरे में 5-6 मज़दूर रहते हैं। मकान मालिकान इन्हें चोरी की बिजली देकर बिल की वसूली खुद डकारते हैं।

रुकी सड़क : अवैध बस्तियां : राजनीतिक संरक्षण

इन बस्तियों में कच्चे क्वार्टरों के अलावा कुछ पक्के व बढ़िया बने मकान व 2-3 मंदिर भी हैं। इनमें ही एक पुलिस चौकी भी कायम है। नियमानुसार सुप्रीम कोर्ट द्वारा अन्तिम फ़ैसला (2006-07) हो जाने व सरकार द्वारा मुआवज़ा अदा कर दिये जाने के तुरंत बाद सरकार को इस ज़मीन का कब्ज़ा ले लेना चाहिये था। परन्तु राजनीतिक, वर्तमान लोकसभा उम्मीदवारों अवतार भड़ाना और कृष्णपाल के, दबाव के चलते इन्हें हटाया नहीं गया। आज यही कृष्णपाल का वोट बैंक बना हुआ है जिसके लालच में कृष्णपाल ने लाखों सेक्टर वासियों का रास्ता रोक रखा है।